Smt. Girija Devi

Smt. Girija Devi - exponent of Poorab ang Thumri, Dadra, Tappa, Kajari, Chaiti, Jhoola (Varanasi)

श्रीमती गिरिजा देवी

SMT GIRIJA DEVI

Born on 8th May 1929 into a well-to do home in Varanasi, Girija's passion for music right from childhood must have amazed her family which had produced no musicians so far: At a time when music was considered a dubious profession, her father gave her every encouragement and placed her in her childhood under the tutelage of Pdt Sarju Prasad Misra. After this guru's death, she became a life-long shishya of the well-known musician Pdt Srichandra Misra and she learnt from him and devotedly served him till his death due to cancer many years later. She made rapid progress and became quite popular as a broadcaster and concert artiste during the guru's lifetime. But then her career was interrupted by her marriage to a successful businessman (and music lover) Sri Madhusudan Jain who was older to her by many years. Part of a large joint-family, her young shoulders were burdened with many household responsibilities. Luckily, a few years later, her husband's love for classical music and his appreciation of her musical accomplishments prompted him to help her resume her musical career. Girija's repertoire was well-stocked with a large variety of classical and semi and light classical types such as Khayal Thumri, Dadra, Tappa, Kajari, Jhoola, Chaiti, Sawan etc--an enviable treasure house of "bandishes". Her greatest assets have been her charming stage personality and her rich, vibrant, widely ranged voice that hardly needs a microphone, a voice that she has polished through years of hard "riyaz",.

Girija Devi's broadcasts from Lucknow and Allahabad, and her National Programmes from AIR brought her into countrywide notice and she became a widely popular and heavily booked vocalist. One celebrated vocalist compared her voice to the tones of Shahnai; no wonder her Chaiti Jugalbandi with Ustad Bismillah Khan's Shahnai became a great hit. Among the numerous honours and Awards won by her have been the U.P. and Central Sangeet Natak

Akademy Awards, Padmasri in 1972, Padmabhushan in 1989 Sangeet Shiromani from Prayag Sangeet Samiti and so on. Her foreign tours starting in 1969 have covered Nepal, U.K. U.S.S.R, European countries, Canada and U.S.A. (many times) Attracted by the revival of the Guru Shishya Parampara traditions in the famous Sangeet Research Akademy, Calcutta, and seeking some respite from her constantly busy performing schedules, she joined the S.R.A and remained a conscientious guru on the Staff from 1977 to 1990. Since her husband had died of a heart attack, another reason for her shifting to Calcutta was to be near her only daughter Sudha who was married into a family in Calcutta. In S.R.A. she trained up several talented young singers among whom Dalia Rahut has already emerged as a noted semi classical singer. The young disciple who provides accompaniment for her nowadays, Sunanda Sharma is emerging as a brilliant singer under Girija Devi's loving grooming.

But back in her home town she is happy as a visiting Professor in the Benares Hindu University; Earlier she had been visiting professor in Shantiniketan in 1992. Girija Devi continues to be a busy and popular concert-artiste. A number of her L.P. Discs, and Cassettes made by H.M.V. in the sophisticated "Music Today" Series bring her rich vibrant voice into innumerable music-loving homes. Even in her sixties, her voice continues to be as high-pitched and sparkling as ever. Today she is considered the doyen of the Benares Poorab Ang of semi and light classical varieties of music. She has also given music direction for some operas in Calcutta where her daughter has tried to organise a dance group of her own (based on Odissi).

SUSHEELA MISRA

(Picture by **Ratan Kumar**)

Smt. Girija Devi - exponent of Poorab ang
Thumri, Dadra, Tappa, Kajari, Chaiti, Jhoola (Varanasi)

श्रीमती गिरिजा देवी

श्रीमती गिरिजा देवी का जन्म ८ मई सन् १९२९ को वाराणसी के एक सुसम्पन्न परिवार में हुआ। बचपन से ही उनके संगीत के प्रति उत्कट लगाव को देख कर उनके परिवार के लोग चकित थे क्योंकि उस समय तक परिवार में किसी संगीतज्ञ या संगीतनुरागी का जन्म न हुआ था। उन दिनों यद्यपि संगीत को संदिग्ध दृष्टि से देखा जाता था, तथापि उनके पिता ने अपनी पुत्री के संगीत-प्रेम को हर प्रकार से प्रोत्साहित किया। उन्होंने पं.सरजू प्रसाद मिश्र के संरक्षण में उनकी संगीत शिक्षा की व्यवस्था कर दी। अपने गुरू के, देहान्त के बाद गिरिजा देवी प्रख्यात संगीतज्ञ पं. श्रीचन्द्र मिश्र की आजीवन शिष्या बन गई। शिक्षा गृहण करते हुए उन्होंने अपने गुरू की बड़े भक्ति भाव से सेवा की। बाद में कैंसर से गुरू की मृत्यु हो गई। परन्तु अपने गुरू के जीवन काल में ही तेजी से प्रगति करती हुई उन्होंने संगीत सभाओं में और रेडियो पर अपने गायन के प्रसारण द्वारा यथेष्ट लोक प्रियता अर्जित कर ली थी।

इसी बीच उनका विवाह श्री मधुसूदन जैन से हो गया जो सफल व्यापारी होने के साथ साथ संगीत प्रेमी भी थे। अपने पति के संयुक्त परिवार में नवविवाहित गिरिजा देवी के कंधों पर गृहस्थी की तमाम ज़िम्मेदारियाँ आ पड़ी। फलस्वरूप उनके गायन अभ्यास में आकस्मिक व्यवधान उत्पन्न हो गया। भाग्यवश कुछ वर्षों बाद ही उनके पति स्वयं अपनी संगीत अभिरूचि के कारण और अपनी पत्नी की गायन कुशलता से प्रभावित होकर गिरिजा देवी की संगीत यात्रा के पुनः शुभारंभ में सहायक सिद्ध हुए।

गिरिजा देवी की संगीत धरोहर में शास्त्रीय, उप-शास्त्रीय तथा सुगम शास्त्रीय रचनाओं का प्रचुर भंडार है। ख़्याल, ठुमरी, टप्पा, दादरा, कजरी, झूला, चैती, सावन के साथ उनके पास अनेकों बंदिशों का खजाना है। परन्तु उनकी सबसे बड़ी सम्पत्ति रही है मंच पर उनके लुभावने व्यक्तित्व और उनकी भरपूर, लहरती, थिरकती, पाटदार आवाज़ का जादू। उन्होंने वर्षो के रियाज़ से अपनी समृद्ध आवाज़ को और भी अ धिक निखारा और परिमार्जित किया है।

लखनऊ-इलाहाबाद के आकाशवाणी केन्द्रों तथा ऑल इंडिया रेडियों के राष्ट्रीय कार्यक्रमों के अन्तर्गत प्रसारित उनके गायन ने उन्हें कुछ समय में ही अति लोकप्रिय गायिका के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया। एक विख्यात गायक ने गिरिजा देवी की आवाज़ की समता शहनाई के सुरों से की है। यही कारण है कि उस्ताद बिसमिल्ला खाँ की शहनाई के साथ गिरिजाजी की चैती में जुगलबंदी को असाधारण सफलता मिली है।

गिरिजा देवी को समय समय पर अनेक सम्मानों और उपाधियों से विभूषित किया गया है। उत्तर प्रदेश तथा केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी ने इन्हें पुरस्कृत किया है। सन १९७२

में उन्हें पद्मश्री की उपाधि प्राप्त हुई। प्रयाग संगीत समिति ने उन्हें "संगीत शिरोमणि" की उपाधि प्रदान की।

१९६९ से उनकी विदेश यात्राओं का दौर शुरू हुआ जिनमें वे नेपाल, इंग्लैंड, संयुक्त राष्ट्र अमरीका, रूस तथा यूरोप के अनेक देशों में गई।

"संगीत शोध अकादमी" कलकत्ता ने जब गुरू शिष्य परम्परा को पुनर्जीवित किया तो उससे आकृष्ट होकर तथा अपनी दिनचर्या की अतिव्स्तता से राहत पाने के लिए वे संगीत शोध अकादमी में सम्मिलित हो गईं और एक नैष्टिक गुरू के रूप में १९७७ से १९९० तक कार्यरत रही। कलकत्ता प्रवास के पीछे एक कारण यह भी था कि दिल के दौरे से उनके पति की अकस्मात मृत्यु हो जाने से वे अपनी एक मात्र पुत्री सुधा के साथ रहना चाहती थीं जो कलकत्ते के एक परिवार में विवाहित हैं। संगीत शोध अकादमी में गिरिजा देवी ने कई होनहार युवा गायकों को प्रशिक्षित किया। इन शिष्यों में डालिया राहुत ने एक जानी मानी अर्धशास्त्रीय तथा सुगम शास्त्रीय गायिका के रूप ख्याति अर्जित कर ली है। युवा शिष्या सुनन्दा शर्मा जो आज कल उनके साथ संगत कर रही हैं एक प्रतिभाशाली गायिका के रूप में उभर रही हैं।

अब गिरिजा देवी वाराणसी वापस आ गई हैं। वे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में विसिटिंग प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। इसके पूर्व वे शांतिनिकेतन में इसी पद पर कार्य कर चुकी है। गिरिजा देवी आजकल भी संगीत गोष्ठियों में अपना गायन बखूबी पेश करती हैं। 'म्यूज़िक टुडे' श्रंखला के अर्न्तगत एच.एम.वी. ने इनके गायन के उच्चकोटि के कैसेट तथा एल.पी.रिकार्ड तैयार किये हैं जो संगीत प्रेमियों के घरों में उनकी सुरीली लहराती आवाज पहुँचा रहे हैं।

अपनी उम्र के छाछठवें साल में भी गिरिजा देवी की आवाज़ पहले की तरह जीवन्त, सुरीली और प्रखर है। बनारस के "पूरब अंग" के अर्धशास्त्रीय और सुगम शास्त्रीय, गायिकी की वे वरिष्ठ आचार्या हैं। कलकत्ता में कतिपय नृत्य नाटिकाओं में उन्होंने संगीत निर्देशन किया है। वहाँ उनकी पुत्री ने ओड़िस्सी नृत्य शैली पर आधारित एक अपनी नृत्यमंडली संगठित करने का उपक्रम किया है।

सुशीला मिश्रा

हिन्दी अनुवाद : **ओम प्रकाश दीक्षित**
छाया चित्र : **राकेश सिन्हा**

निदेशक संस्कृति विभाग उ.प्र. द्वारा प्रकाशित एवम् **शिवम आर्ट्स** 211, निशातगंज, लखनऊ दूरभाष - 386389 द्वारा मुद्रित।